Bio Vet Innovator Magazine

Volume 1 : Special Issue 1 : World Rabies Day - 2024

OPEN ACCESS | Rabies Day Special: Bridging the Gap between Science and Safety | Popular Article

रेबीज़: एक घातक ज़ूनोटिक बीमारी

आशा, पूजा, रवि डबास, प्रत्यांशु श्रीवास्तव, रूपम सचान, अंकित सरन

नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, 482004

***Corresponding Author:** ravidabas2000@gmail.com*
DOI - https://doi.org/10.5281/zenodo.13870188

Received: September 08, 2024
Published: September 28, 2024
© All rights are reserved by **रवि डबास**

परिचय:

रेबीज़ एक अत्यधिक घातक वायरल बीमारी है जो जानवरों से इंसानों में फैल सकती है। यह ज़ूनोटिक बीमारी है, यानी इसे संक्रमित जानवरों के काटने या खरोंचने से मानव में भी संक्रमण हो सकता है। यह बीमारी आमतौर पर संक्रमित जानवरों, खासकर आवारा कुत्तों, चमगादड़ों, रैकून, स्कंक और लोमड़ियों के काटने या खरोंच से फैलती है। रेबीज़ वायरस केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है, जिससे मस्तिष्क में सूजन (एन्सेफलाइटिस) हो जाती है और गंभीर स्थिति में मृत्यु हो सकती है।

यदि किसी संक्रमित जानवर के संपर्क में आने के बाद तत्काल उपचार नहीं किया जाए, तो यह बीमारी जल्दी ही घातक साबित हो सकती है। रेबीज़ का कोई प्रभावी इलाज नहीं है, लेकिन अगर घाव की त्वरित सफाई और टीकाकरण किया जाए, तो रेबीज़ से बचा जा सकता है। रेबीज़ से होने वाली मानव मौतों में से 99% मामलों में कुत्ते इसका मुख्य कारण होते हैं। भारत में रेबीज़ व्यापक है और दुनिया भर में रेबीज़ से होने वाली मौतों का 36% हिस्सा भारत से आता है। हर साल 28 सितंबर को विश्व रेबीज़ दिवस मनाया जाता है, जो इस बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए समर्पित है।

इटियोलॉजी:

रेबीज का कारण रबडोविरिडी परिवार का लिसा वायरस होता है और इसमें एकल-स्ट्रैंडेड RNA जीनोम होता है। यह वायरस गोली के आकार का होता है और विशेष रूप से तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है। रेबीज वायरस बहुत नाजुक होते हैं और आसानी से नष्ट हो सकते हैं।

संचरण:

संक्रमित कुत्ते की लार रेबीज फैलने का सबसे सामान्य स्रोत होती है, क्योंकि बीमारी के लक्षण दिखने से पहले ही कुत्ते की लार ग्रंथि में रेबीज वायरस की बड़ी मात्रा मौजूद होती है।

चिकत्सीय संकेत: रेबीज के लक्षण दो मुख्य रूपों में विभाजित होते हैं: उग्र रूप (फ्यूरियस फॉर्म) और पैरालिटिक रूप (डंप फॉर्म)

कुत्ते और बिल्ली में:

1. उग्र रूप (व्यवहार और उत्तेजना में बदलाव):

उग्र रूप में कुत्ते अत्यधिक हिंसक हो जाते हैं, लंबी दूरी तक भाग सकते हैं, और काल्पनिक चीजों को पकड़ने की कोशिश करते हैं। पानी पीने में असमर्थ होते हैं, अत्यधिक लार गिरती है, और उन्हें प्रकाश से डर (फोटोफोबिया) हो जाता है। उनकी आवाज में बदलाव आता है और जबड़ा ढीला हो जाता है, जिससे जीभ बाहर लटक जाती है।

2. पैरालिटिक रूप (डंप फॉर्म):

पैरालिटिक रूप (डंप फॉर्म) में जानवर खुद को अंधेरी जगहों में छिपा लेते हैं। इस दौरान जबड़े, जीभ और पिछले हिस्से का पक्षाघात हो जाता है, जिससे वे काटने में असमर्थ होते हैं। अंततः श्वसन पक्षाघात के कारण उनकी मृत्यु हो जाती है।

मवेशियों में:

1. उग्र रूप:

उग्र रूप में, जानवर अन्य जानवरों या वस्तुओं पर आक्रामक रूप से हमला करते हैं। वे जोर से चिल्लाते हैं और उनकी चाल असंयमित हो जाती है। अत्यधिक लार बहने लगती है और थूथन में कंपन होता है। इस अवस्था में जानवर यौन उत्तेजना और आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, साथ ही गले का पक्षाघात भी हो जाता है।

2. पैरालिटिक रूप:

पैरालिटिक रूप में, जानवरों के पिछले हिस्से में ढीलापन आ जाता है और चलते समय वह हिलने लगता है। इस दौरान लार का अत्यधिक गिरना होता है और जम्हाई जैसी गतिविधियां देखी जाती हैं, जिससे उनकी सामान्य गतिविधियां प्रभावित हो जाती हैं।

घोड़े में:

घोड़ों में रेबीज के लक्षणों में मांसपेशियों में कंपन, गले का पक्षाघात और सुस्ती शामिल होती है। इसके साथ ही अचानक लंगड़ापन आ सकता है और घोड़ा बार-बार सिर पटकने जैसी हिंसक गतिविधि कर सकता है।

मनुष्यों में:

मनुष्यों में रेबीज के लक्षण काटने की जगह पर दर्द और जलन से शुरू होते हैं। वायरस धीरे-धीरे मस्तिष्क तक पहुंचता है, जिससे लक्षण दिखने लगते हैं और बीमारी घातक हो जाती है। पानी पीने की कोशिश में गले में दर्दनाक ऐंठन (हाइड्रोफोबिया) हो सकती है। रोगी को बेचैनी, अजीब व्यवहार, ऐंठन, और अत्यधिक लार भी हो सकती है। आमतौर पर कुछ दिनों में मौत हो जाती है।

निदान:

अगर कोई जानवर केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के लक्षण दिखाता है और उसका टीकाकरण इतिहास अज्ञात है, तो रेबीज को संभावित कारण माना जाना चाहिए। रेबीज की पुष्टि के लिए कॉर्नियल इंप्रेशन स्मीयर और मस्तिष्क के फ्लोरोसेंट एंटीबॉडी परीक्षण (एफएटी) का उपयोग किया जाता है। एफएटी एक तेज और विश्वसनीय परीक्षण है जिसकी सटीकता 99.9% है। इसके अलावा, विक्रेताओं की स्टेनिंग तकनीक के माध्यम से मस्तिष्क में नेग्री बॉडीज (इंट्रासाइटोप्लाज्मिक इंक्लूजन बॉडीज) की पहचान की जाती है।

संपर्क के बाद उपचार:

किसी संक्रमित जानवर के संपर्क के बाद रेबीज से बचाव के लिए तुरंत घाव की सफाई और टीकाकरण किया जाना चाहिए, जिससे लगभग 100% मामलों में रेबीज से बचाव हो सकता है। इसके लिए घाव को फेनोलिक साबुन या बहते पानी से अच्छी तरह धोकर साफ किया जाता है। इसके बाद एंटीसेप्टिक्स लगाई जाती हैं। घाव पर पट्टी या टांके लगाने से बचना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात, जल्द से जल्द एंटी-रेबीज वैक्सीन दी जानी चाहिए।

Citation: आशा, पजा, रवि डबास, प्रत्यांशु श्रीवास्तव, रूपम सचान, अंकित सरन. (2024). रेबीज़: एक घातक ज़ूनोटिक बीमारी. In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 1, Issue Sp 1, pp. 4–6). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.13870188

संपर्क के बाद टीकाकरण शेड्यूल:

अगर जानवर पहले से टीकाकरण नहीं हुआ है, तो काटने के 24 घंटे के भीतर टीका शुरू किया जाता है और फिर 3वें, 7वें, 14वें, 28वें, और अगर जरूरत हो तो 90वें दिन (एसेन का शेड्यूल) पर टीका दिया जाता है।

Citation: आशा, पजा, रवि डबास, प्रत्यांशु श्रीवास्तव, रूपम सचान, अंकित सरन. (2024). रेबीज़: एक घातक ज़नोटिक बीमारी. In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 1, Issue Sp 1, pp. 4–6). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.13870188